संस्कृति संगम, ISSN: 3049-0111
खंड 3 अंक 1, जनवरी – जून 2025

श्री जयनारायण यात्री विचरित" ध्रुवचरितम् "काव्य का कथानक एवं काव्यशास्त्रीय तत्व

डॉ संधि शर्मा

शोध-छात्रा संस्कृत विभाग, मानविकी संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

श्री जयनारायण यात्री देववाणी संस्कृत के परम उपासक एवं तत्सर्मिप लेखक है। श्री जयनारायण यात्री अपने परिचय में स्वयं को भृगुवंशी गौड ब्राह्मण बतलाया है लेकिन ये अपने नाम के साथ यात्री "लिखते हैं। इनके द्वारा इस प्रश्न पर बताया गया कि मानव जन्म एक यात्री के रूप में होता है। जो परमात्मा के पास से जीवलोक में यात्रा करता हुआ यहाँ इस लोक में आया और यात्रा पूण करके उसी परमात्मा में समाहित होगा। अभी मेरा जीवन एक यात्री का है। इसलिए मैने अपने नाम के साथ यात्री लगाया हैं।2 जयनारायण यात्री जी ने अपनी पढ़ाई श्री शादीराम पचीसिया पाठशाला नौहर (राजस्थान) से की जहाँ संस्कृत माध्यम से ही पठन-पाठन होता था और पाठशाला में रहते हुए संस्कृत भाषा-बोलचाल की भाषा बन गई।

जयनारायण यात्री जी की आगे की पढ़ाई भादौरिया संस्कृत महाविद्यालय फतेहपुर सिकरी, पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्वामी शंकरनाथ वैदिक महाविद्यालय, अजिया पंजाब, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से ही साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा पंजाब शिक्षा विभाग में ही सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।

महाकाव्य में लौकिकता, अलौकिकता, मानवता-दानवता, सुन्दरता-असुन्दरता का समग्र चित्रण होता है। इसमें अधंकार पर प्रकाश का असत् पर सत् का और मृत्यु पर विजय का उद्घोष रहता हैं। महाकाव्य की विविध परिभाषाओं से यह सिद्ध होता है कि काव्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा महाकाव्य की परिभाषा अधिक परिवर्तनशील रही हैं क्योंकि महाकाव्य जनजीवन से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहते है और जनजीवन की धारणाएँ युग प्रभावानुसार बदलती रहती हैं।

'ध्रुवचरितम्' काव्य का कथानक एवं काव्यशास्त्रीय तत्व:
श्री जयनारायण यात्री द्वारा रचित ध्रुवचरितम् महाकाव्य" 15 सर्गो में रचित महाकाव्य हैं। जिसमें मनु व शचि के पुत्र उत्तानपाद तथा उत्तानपाद और सुनीति के पुत्र ध्रुप का चरित वर्णित हैं। प्रथम चार श्लोकों में कवि ने अपने आराध्य देव कृष्ण की वन्दना की हैं और स्वयं को एक जहाज का पँछी मानते हुए काव्यरूपी नौका को पार लगाने की प्रार्थना की है।1 मन के वंश का परिचय देते हुए सर्वप्रथम ब्रह्म के अलोकिक कर्म संसार की रचना तथा ब्रह्म की उत्पति का वर्णन किया है - भगवान की नाभि से उत्पन्न कमल से जन्म ग्रहण करने वाले संसार की रचना करने वाले, चहुर्मुखी ब्रह्म ऋषियों और देवताओं से पूजित होते हुए अपने कमलासन पर विराजमान होते हुए सुशोभित हैं।2

"ध्रुवचरित" महाकाव्य का कथानक - मनु के वंश की उत्पति के साथ मनु की उत्पति का वर्णन करते हुए कवि बताते है कि उस ब्रह्म की सन्तान धर्मात्वा और वदे को जानने वालों में श्रेष्ठ सुख-दुख और मोह से रहित, देवताओं द्वारा पूजनीय मनु ने अपने जन्म से इस भूमि को पवित्र किया।3 बुद्धिमानों और जितेन्द्रियों में श्रेष्ठ उस मनु ने गुरुओं के चरणों में बैठकर वेद की सभी कलाएँ और उसने अपने परिश्रम से चौदह विधाएँ पढ़ी। सभी प्रकार की विद्या प्राप्त करके सज्जन, जवान, भूमि का राजा बने हुए, गर्दन पर तीन रेखा वाले, छिपी हुई जत्रु हड्डी वाले उस मनु ने मतवाली शतरूपा के साथ विवाह कर लिया।6 मनु के राज्य में सभी प्रजा सुखपूर्वक अपना जीवन निर्वाह करती थी। राज्य में सर्वज्ञ कल्याण, शान्ति, खुशियाँ भी सभी प्रजाजन निरोगी थे। राज्य से अन्न का उत्पादन बहुत था। राज्य में चोरी नही होती थी। ऐसे राज्य में कष्ट का विहिन मार्ग पर चलते हुए राजा मनु ने गृहस्थ का भी उपयोग किया।

यहां कवि मनु के राज्य की सुन्दरता बताते हुए कहते है। चारों तरफ ऊँच-ऊचे सुन्दर भवन ऐसे प्रतीत होते थे मानो आसमान को छू रहे हो। इस प्रकार अपना भौतिक शरीर छोड़कर त्रिलोकी नाथ के द्वारा भेजे गए पार्षद के समय विष्णुलोक को चले गए। 'ध्रुवचरितम्' महाकाव्य में कवि द्वारा काव्यशास्त्रीय तत्व अपने आप में एक प्रतिभा हैं। इस महाकाव्य में कवि ने छन्द अलंकार, रस आदि का यथास्थान सुन्दर प्रयोग किया है। अतः काव्यात्मक दृष्टि से यह एक सफल महाकाव्य है।

द्वितीय सर्ग में श्री जयनारायण यात्री ने रानी के गर्भधारण करने का परिचय दिया है और राजा ने स्वयं अन्तःपुर में जाकर रानी के कुशलक्षेम पूछने की बात कही है -झुके हुए सिर वाली और हाथ जोड़े हुए दासी ने आकर मनु से कहा कि है स्वामी बधाई हो, रानी गर्भवती हो गई।19 इस समाचार को सुनकर राजा मनु बहुत खुश हुए। कुछ समय बीत जाने पर जैसे शची ने जंयन्त को पार्वती ने कार्तिकेय को जन्म दिया वैसे ही रानी ने राजकुमार को जन्म दिया। राजमहल में राजा के साथ-साथ सभी का मन खुशी से भर गया। तत्पश्चात् नामकरण संस्कार में राजकुमार का नाम उतानवाद रखा गया? धीरे-धीरे उतानपाद इस प्रकार बढ़ने लगा

जैसे चन्द्रमा की कला बढ़ती हैं। जब उतानपाद युवा जैसा दिखने लगा तब राजा मनु ने उसका विवाह सुनीति से कराकर सारा राज्य का भार उसे सौंपकर वन गमन कर गया। सुनीति के साथ करते हुए राजा ने सुरूचि के समय दूसरा विवाह कर लिया तत्पश्चात् दोनों रानियाँ गर्भवती हो गई। कुछ दिनों पश्चात् रानी सुनीति ने कमल के समान कान्ति वाले पुत्र को जन्म दिया। तब राजमहल खुशी की लहरों से भर गया। कुछ दिनों बाद राजकुमार का नाम संस्करण हुआ तथा ऋषियों ने इसका नाम "ध्रुव" रखा कुछ दिनों पश्चात् रानी सुरूचि ने भी फूल के समान पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम "उत्तम" रखा गया। इस प्रकार जब वे राजकुमार युवा हो गए तब राजा ने उन दोनों राजकुमारों को गुरु के पास शिक्षा प्राप्त करने गुरुकुल भेज दिया। बहुत वर्षों के बीतने पर उन गुरुओं द्वारा भेजा गया तपस्वी राजा के पास आया और निवेदन किया की पूर्ण शिक्षित अपने पुत्रों को ले आओ, कुछ दिनो पश्चात् किसी दिन दोनों राजकुमारों के खेलते हुए रानी सुरुचि ने ध्रुव का अपमान कर दिया। अपनी माता से अपमानित ध्रुव बहुत व्याकुल हुआ तथा वह वन में तपस्या करने निकल गया। गर्मी, सर्दी, वर्षा की परवाह किए बिना ध्रुव ने लगातार कई समय तक घोर तपस्या की। तपस्या करते हुए एक दिन इन्द्र की बड़ी इच्छा हुई कि अपस्रा उर्वशी को भेजकर ध्रुव की तपस्या भंग की जाएं मग रवह भी निष्फल रहा। लगातार तपस्या करते हुए एक दिन पीले कपड़ों वाला चतुर्भुज, गदा धारण करने वाले, शंख, चक्र और पदम हाथ में लिए श्रीवत्स की शोभा से चमकते हुए मुकुटधारी भगवान विष्णु आकर ध्रुव के सामने प्रकट हो गए।

विष्णु भगवान बोले - हे सुमुख अब अपने घर जा तरो कल्याण हो। तुम अपना पिता द्वारा दिए गए समृद्ध राज्य को छतीस हजार वर्ष तक भागेगा। भगवान के वचन सुनकर ध्रुव उन्हें दण्डवत प्रणाम करके घर चला गया।13 ध्रुव के घर पहुंचने पर दोनों रानियां, राजा उसका भाई उत्तम व सभी प्रजा जन बहुत खुश हुए। राजा उतानपाद अपने पुत्र को ..... देकर घर - छोड़कर तपस्या के लिए वन में चला गया। इस प्रकार शाशन करते हुए प्रजापति शिशुमार ने राजा ध्रुव की कीर्ति से प्रसन्न होकर अपनी पुत्री भूमि का विवाह राजा ध्रुव के साथ कर दिया। अपनी पत्नि भुमि के साथ रहते-रहते राजा ध्रुव के पास वासुदेव की पुत्री 'इला' का विवाह प्रस्ताव आ गया। राजा ध्रुव ने उसे स्वीकार किया तथा राजा ध्रुव का दूसरा विवाह इलर के साथ हो गया। राजा ध्रुव अपनी दोनों पत्नियाँ 'भुमि' व 'इला' के साथ सुखपूर्वकजीवन व्यतीत करने लगे। दूसरी तरफ यक्षों ने ध्रुव के भाई उत्तम को मार दिया। उत्तम के साथ उसकी माता यक्षो ने ध्रुव के भाई उत्तम को मार दिया।

उत्तम के साथ उसकी माता सुरूचि भी कर गई। भाई की मृत्यु से क्रोधित हुआ ध्रुव ने यक्षो से आक्रमण करके उन्हें मारा गिराया। इस प्रकार राज्य में रहते हुए रानी भुमि ने 'वत्सर' नामक तथा रानी 'इला' ने 'उत्कल' नाम राजकुमार को जन्म दिया। दोनों राजकुमार चन्द्रमा की कला की भांति दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगे। गुरुओं ने भी उन्हें सभी कर्मो से सुशिक्षित कर दिए। राजा ध्रुव अपने बड़े पुत्र को राज्य का भार सौंपकर वन में चले गए। लगातार कई दिनों तक तपस्या करने पर एक दिन सोने से बना अपनी इच्छा से चलने वाला सूर्य की तरह चमकता सुन्दर विमान उसके आश्रम के सामने उतरता हैं। चार भुजा वाले पीले वस्त्र पहने दो पुरुष ध्रुव के सामने प्रकट होते है। ध्रुव ने उनको क्या प्रणाम किया। हे निर्मल बुद्धि वाले तपोनिधे! ळम दोनों त्रिलोकी के नाथ भगवान हरि के पार्षद है उन्होंने ही तुम्हें पृथ्वी लोक से विष्णुलोक में लाने भेजा हैं। इस प्रकार प्रसन्न मन वाला राजा ध्रुव अपना भौतिक शरीर छोड़कर विमान पर बैठकर सभी लोकों का उल्लघंन करते हुए विष्णु लोक में देवताओं द्वारा यश गान गाते हुए फूलों की वर्षा द्वारा चला जाता है।

ध्रुवकाव्य में काव्यशास्त्रीय तत्व पन्द्रह सर्गो में निबद्ध या महाकाव्य पौराणिक कथा पर आधारित है। लोक में प्रचलित ध्रुव भक्त और प्रहलाद् भक्त की कथानकों की लोकप्रियता को देखते हुए कवि ने इसे एक श्रेष्ठ काव्य के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया हैं जो काव्यशास्त्रीय सभी तत्वों के आधार पर खरा उतरता हैं। भाषा की दृष्टि से काव्य में प्रौढ़ता दिखाई पड़ती है। इसके साथ-साथ प्राचीन कवियों कालिदास, श्री हर्ष, मा◌ा, भारवि आदि के काव्यों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता हैं। कही-कहीं शैली परिवर्तन में कालिदास के मेघदूत " तथा रघुवंश श्री हर्ष के "नैषधचरितम् " की छाया स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है।

प्रकृति चित्रण कही अधिक और कथा प्रवाह को धीमा करने वाला बन जाता हैं। हरियाणवी संस्कृति व रिति-रिवाजों का उपयोग भी किया गया हैं। ध्रुवचरितम्' में काव्यशास्त्रीय तत्वों का प्रयोग करते हुए कवि ने अलंकारों का भी सुन्दर प्रयोग किया है जिनमें मनुप्रास, रजाभोषिक्ति, उपमा उत्प्रेक्षा अलंकार प्रमुख हैं। कवि द्वारा छन्दों का भी सुन्दर प्रयोग काव्य में दिखाई पड़ता हैं। इन्द्रवज्रा, उपेद्रवज्रा, शालिनी इनके काव्य के प्रमुख छन्द हैं।

इतिवृत द्वारा पौराणिक होते हुए भी सामाजिक रिति-रिवाज का समावेश करके रोचकता प्रदान की हैं। एक बालक द्वारा तपस्या का आदर्शवाद ध्रुव' को माना जाता है। किस प्रकार अपने त्याग, धैर्य, साहस के बल पर अत्याचार का सामना करके सत्य को स्थापित किया अपने पूवर्वती आधुनिक एवं प्राचीन प्रसिद्ध महाकवियों का अनुसरण करते हुए कवि ने काव्य को रोचक बनाने के साथ-साथ इसमें यथास्थान काव्यशास्त्रीय तत्वों का भी समावेश किया हैं। जिससे यह काव्य श्रेष्ठ काव्य की श्रेणी में गिना जाता हैं।

रस

कवि ने ध्रुवचरितम्' महाकाव्य के अन्तर्गत सभी रसों का समावेश किया हैं। जो यथास्थान कथानक व काव्य को शोभा प्रदान कर रहे है। इस काव्य का कथानक धर्म प्रधान होने के कारण इसमें प्रधान रस शान्त रस है यथास्थान शृंगार, वीर और अद्भुत रस का भी प्रयोग काव्य को श्रेष्ठ काव्य की श्रेणी में स्थापित करने में सहायक हैं।

निष्कर्ष

श्री जयनारायण यात्री द्वारा रचित 15 सर्गों में विभक्त ध्रुवचरितम् " महाकाव्य में मनु और शचि के पुत्र उत्तान पाद तथा उत्तानपाद और सुनीति के पुत्र ध्रुव का चरित चित्रण प्रस्तुत किया गया हैं। प्रस्तुत महाकाव्य में राजा ध्रुव के जीवन के प्रत्येक बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया हैं। इसमें वर्णन किया गया है कि राजा ध्रुव किस प्रकार अपनी तपस्या के बल पर विष्णुलीन को जीत लिया था तथा कई वर्षों तक राज्य करके किस

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. जनासि कश्चिन्न ममाश्रयोऽस्ति, पोतद्विजस्येव भवाबिमध्ये त्वामन्तरेणाच्युत ! काव्यनावं, पारंमदीयां कृप्या विधेहि।।
[2]. स्रष्टा जगत्या हरिनाभिजातात् पंकेरुहाज्जन्म गृहीतवान् यः। देवर्षिपूज्य श्चतुरास्य शोभी पद्मासनं भूषयते स्वलोके।।
[3]. तस्य प्रसूतिर्मनुनाम धेया, धर्मात्मनां वेदविदां वरिष्ठा। निर्द्वन्द्वमोहा त्रिदशार्चनीया, चक्रे स्वजन्या प्रयतां धरित्रीम्।।
[4]. प्रज्ञावतां संयमिनां वरिष्ठ आस्थाय पादेषु मनुर्गुरूणाम्। अध्यैत वेदान् सकलाः कलाश्च विद्याः प्रयासेन चतुर्दशासौ।।
[5]. सौम्योवयस्थः क्षितिभूपभूतो ग्रीवात्रिरेखश्च निगूढ़जत्रुः। चक्रे मनु र्यौवनमत्तया स, साकं विवाहं शतरूपयाथ।।
[6]. समेत्यदासी विधिजं प्रणम्य, विनीतशीर्षा सकरा ं लिश्च। जगाद वर्धापनमस्तु भर्तः! प्रलब्ध सत्वा महिषी विजाता।।
[7]. शची जयन्तं गिरिजा कुमारं तथैव राज्ञाी सुषुवे कुमारम्। मनांसि राज्ञो भवने जनानामतीव हर्षोर्मिभृतान्य भूवन्।।
[8]. पीताभावसनचतुर्भुजो गदाभृद् वैकुण्ठः करधृतशंखचक्रपद्मः। श्रीवत्सच्छविलसितः पुरः किरीटी, साकारः प्रकटित एत्य स ध्रुवस्य।।
[9]. एवं प्रशासति धरां नृपतिध्रुवेऽस्य कीर्तिर्गता सुरपुरं धरणेः कथा का। एतां निशम्य शिशुमार इहाऽजगाम, छातुं प्रजापतिरयं स्वसुताममुष्मै।।
[10]. प्रस्ताव आगत इहा निलनिर्जरस्य, तस्यात्मजापरिणयस्य सहध्रुवेण। आसीत् तदा प्रसित एव नृपः स पूर्व जातो विवाह इलयास्य समं द्वितीयः।।
[11]. चतुर्भुजौ हरि रिव पीतवाससौ, गदाधरौ कनककिरीट शोभितौ। अराजता मिह हि विमानसंस्थितौ, नरौ ध्रुवो नतशिरसा ननाम तौ।।
[12]. प्रणम्यतौ वपुरपहाय भौतिकं समुद्यतो भवति विमान मासितुम्। यदा ध्रवो धुरि यममीक्षते पदं निधाय तच्छिरसि समारुरोह सः।।